कृषि विज्ञान केन्द्र, रामगढ़ के द्वारा तिलैया गॉवं में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया

कृषि विज्ञान केन्द्र, रामगढ़ के द्वारा गुरूवार को डी.बी.टी. बायोटेक–किसान परियोजना के अंतर्गत मांडू प्रखण्ड के तिलैया गॉव में एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में किसानों के बीच भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना से आये कृषि वैज्ञानिक डॉ पवन जीत, डॉ. एन. राजू सिंह एवं वरीय तकनीकी सहायक श्री मनोज कुमार सिन्हा नें पूर्वी पहाड़ी और पठारी कृषि–जलवायु क्षेत्र में कृषि वानिकी को पर्याप्त पानी की आपूर्ति के लिए जल प्रबंधन तकनीक के बारे में विस्तृत रूप से समझाते हुए कहा कि पानी का उपयोग घर, कृषि और व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक उपयोग किया जाता है। अब ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में भी अत्यधिक सिंचाई जल कि कमी हो जाने के कारण होने वाली समस्या एवं उसके समाधान के बारे में बताया। उन्होंने ने कहा कि पानी को संरक्षित यानी कि जल संरक्षण के विषय में हमें जल्द से जल्द सोचना होगा क्योंकि जल ही जीवन है। आज ना सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रों में बोरवेल बल्कि शहरी क्षेत्रों में कई बड़े कल कारखानों में पानी का उपयोग होने के कारण भी पानी की किल्लत होने लगी है। जल के संरक्षण के लिए पलवार (मल्चींग), डोभा और टपक सिंचाई मुख्य तकनीक को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. इन्द्रजीत ने किसानों से कहा कि वर्षा जल संचयन या रेन वाटर हारवेस्टिंग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें हम वर्षा के पानी को जरूरत की चीजों में उपयोग कर सकते हैं। वर्षा के पानी को एक निर्धारित किए हुए स्थान पर जमा करके हम वर्षा जल संचयन कर सकते हैं एवं इसका उपयोग कृषि में सिंचाई के लिए कर सकते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना से आये वैज्ञानिक डॉ. एन. राजू सिंह एवं वरीय तकनीकी सहायक श्री मनोज कुमार सिन्हा ने किसानों के बीच कहा की बढ़ती हुई मानव एवं पशु संख्या को ईंधन, इमारती लकड़ी, चारा, खाद्यान्न, फल, दूध, सब्जी इत्यादि की आपूर्ति के लिये घोर संकट का सामाना करना पड़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में कृषि वानिकी ही एक ऐसी पद्धति है, जो उपर्युक्त समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। कृषि वानिकी समय की मांग है। अतः कृषकों को जल संचयन के लिए इस तकनीक को अपनाना चाहिए। पहाड़ी और पठारी कृषि–जलवायु क्षेत्र में कृषि वानिकी को अपनाने से खाद्यान्न, जल, सब्जियां, चारा, खाद, गोंद आदि अनेक वस्तुएं उपलब्ध होगी। इस प्रक्षेत्र दिवस में ग्राम के लगभग 60–70 किसान उपस्थित थे।